वर्ष : 1, अंक : 4

जुलाई-सितम्बर 2017

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

हिन्दुस्तानी

भाषा भारती

त्रैमासिक पत्रिका

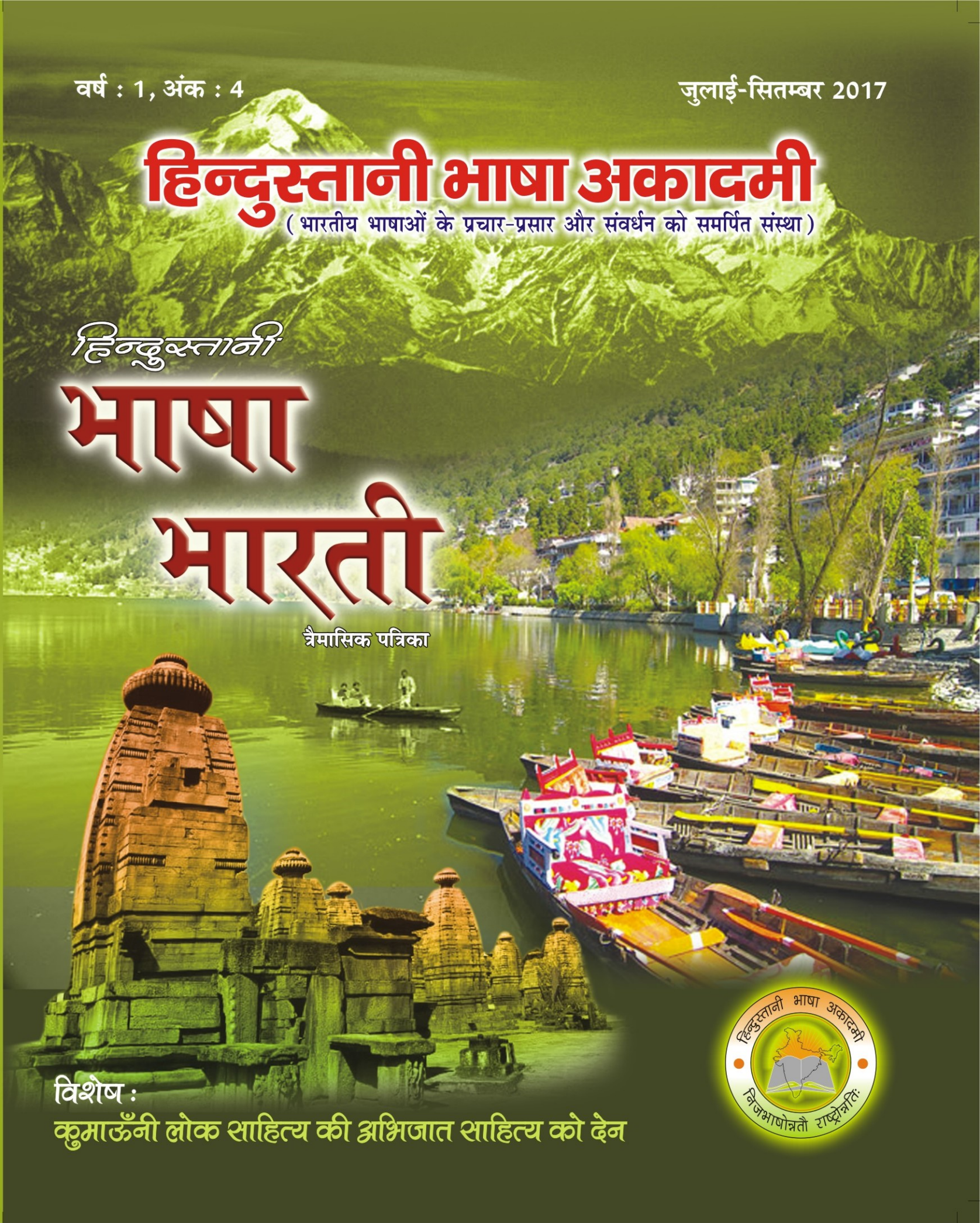

विशेष :

कुमाऊँनी लोक साहित्य की अभिजात साहित्य को देन

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

निजभाषोन्नतौ राष्ट्रोन्नतिः

वर्ष : 1, अंक : 4

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

मूल्य : 30 रुपये

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

सागर समीप
डॉ. बीना राघव
सह सम्पादक

बृजेश द्विवेदी
प्रवक्ता

अमरनाथ गिरि
कानूनी सलाहकार

सम्पादकीय सहयोग
गीता पंडित
विजय कुमार शर्मा
नीरज दुबे

कार्यालय :
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
ई-मेल : info@hindustanibhashaakadami.com
hindustanibhashabharati@gmail.com
वेबसाइट : www.hindustanibhashaakadami.com
सम्पर्क सूत्र : 09873556781, 09968097816

- पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार हैं । प्रकाशक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जाएगा ।
- सम्पादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक है ।

स्वामी हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी ट्रस्ट, प्रकाशक व मुद्रक सुधाकर बाबू पाठक द्वारा 3675, राजा पार्क, रानीबाग, दिल्ली-110034 से प्रकाशित और सन्नी प्रिन्टर्स, बी-234, नारायणा इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित ।

विषय सूची

अतिथि सम्पादक की कलम से	04
सम्पादकीय	05
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य	06
साक्षात्कार : डॉ. बल्देव भाई शर्मा	07
कुमाऊँनी लोक साहित्य की अभिजात साहित्य को देन	12
वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएँ	16
साक्षात्कार : श्री सुधाकर पाठक	18
'क्रांतिकेशरी' महाकाव्य-एक दृष्टि	23
अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त हों	28
राष्ट्रभाषा हिन्दी : कुछ उभरते प्रश्न एवं समाधान	31
वर्तमान समय में हिन्दी का महत्त्व या हिन्दी हम क्यों पढ़ें	32
राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए आवश्यक हिन्दी	35
हिन्द की गंध भरे भाव की भाषा हिन्दी	38
हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित करना	40
अनुदित मैथिली कविताएँ	43
भारतीय साहित्य में एकता के स्वर	44
अकादमी की साहित्यिक गतिविधियाँ :	
अकादमी के आगामी आयोजन	47
पुस्तक लोकार्पण एवं काव्यपाठ समारोह	49
पुस्तक लोकार्पण एवं सम्मान समारोह	50

सम्पादकीय

मेरी कलम से...

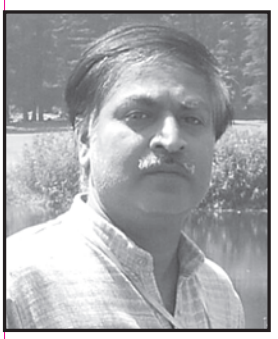

डॉ. रमेश तिवारी
अतिथि सम्पादक

हिन्दुस्तानी भाषा भारती का यह नया अंक आप सबके लिए सहर्ष प्रस्तुत है। जुलाई-सितम्बर अंक का प्रकाशन जिस मास में हो रहा है, वह हिन्दी भाषा के लिए ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। आजादी के बाद राजकाज की भाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का प्रयास 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में फलीभूत हुआ। इस नाते सितम्बर मास हिन्दी भाषा के लिए ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। उस पवित्र दिन का स्मरण और हिन्दी भाषा की निरंतर प्रगति के लिए हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी सदैव प्रयासरत है।

हिन्दी भाषा के प्रति राष्ट्रीय चिंतनबिंदु और इससे जुड़ी शासकीय-संस्थागत दृष्टी को हिन्दी प्रेमियों के समक्ष रखना हमारे प्राथमिक दायित्त्व में है। इस अंक में हमने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा जी से इन्हीं विषयों के संदर्भ में लम्बी बातचीत की है।सरकारी संस्थाओं में पदासीन पदाधिकारीगणों की हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति क्या रुख हैं, ऐसे अनेक सवालों के जवाब श्री बल्देव भाई शर्मा जी ने दिए हैं। इस दृष्टी से यह बातचीत अत्यंत उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है।

पिछले अंकों की तरह इस अंक में भी किसी लोकभाषा पर सामग्री रखने की योजना थी जिसके परिणामस्वरुप हमने इस अंक में कुमाऊँनी भाषा को सम्मिलित किया है। डॉ. पुष्पलता भट्ट का यह आलेख कुमाऊँनी लोक साहित्य की उपादेयता पर विस्तृत-विश्लेषण का परिणाम है। स्थानीयता, प्रांतीयता के साथ-साथ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भों में भी हिन्दी भाषा की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। डॉ. मुक्ता जी का 'वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएँ' शीर्षक आलेख में समकालीन वैश्विक सन्दर्भों और भारतीय भाषाओं के यथार्थ को बहुत खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संस्थापक-अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक जी से बातचीत के बहाने डॉ. बीना राघव 'वीणा' जी ने पत्रिका के पाठकों को श्री पाठक जी से रू-ब-रू कराने का अवसर ढूँढ निकाला है। इस साक्षात्कार के अंतर्गत अकादमी की स्थापना, उद्देश्य, कार्यक्षेत्र, आयोजन और उपलब्धियों की पर्याप्त जानकारी मिलती है। सुधी पाठकों के लिए यह अनिवार्य और अत्यंत उपयोगी है।

जब हम अपनी भाषा को किसी बड़ी भाषा के सामने रखते हैं तो स्वयं में कभी-कभी हीन भावना का भी उदय होने लगता है। परम्परा की ओर देखें तो ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा के आन्दोलन से पूर्व शासन व शासक की भाषा अंग्रेजी रही है। हिन्दी के विकास के बावजूद आज जब हम अंग्रेजी की तरफ देखते हैं तो स्वयं में हीन भावना महसूस होती है। आचार्य बलवंत जी ने 'अंग्रेजी दासता से मुक्त हों' विषयक आलेख में इस भयाक्रांत मानसिकता को सार्थक संदेश दिया है। हम सभी को अपनी भाषा का गर्व तो होना ही चाहिए। इस कड़ी में राष्ट्रभाषा संबंधी जरूरी प्रश्नोत्तरों का उल्लेख डॉ. प्रभु चौधरी जी के आलेख में भी मौजूद है।

आज के परिवेश में हमें हिन्दी क्यों पढ़ने की जरूरत है? इस दृष्टि से विचार करते हुए डॉ. बीना राघव 'वीणा' जी का आलेख भी पठनीय है। इसी से मिलता-जुलता श्री श्याम स्नेही जी का आलेख 'राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए आवश्यक हिन्दी' में इस अंक की श्रीवृद्धि में सहायक है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित देखने के इच्छुक पाठकों को श्री सीताराम गुप्ता जी का आलेख भी रुचिकर और उपयोगी प्रतीत होगा।

अन्य स्थायी स्तंभों के साथ-साथ इस बार मैथिलि भाषा की कविता को हिन्दी अनुवाद के साथ पाठकों के लिए प्रस्तुत किया गया है। डॉ. मुक्ता का आलेख 'भारतीय साहित्य में एकता के स्वर' , आशुतोष द्विवेदी का 'हिन्द की गंध भरे भाव की भाषा हिन्दी' शीर्षक आलेख भी आप सबको पसंद आएगा। हिन्दी भाषा की दिन दूना रात चौगुना श्रीवृद्धि के लिए हमारी मंगलकामनाएँ !

संदेश

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

सितम्बर का महीना हिन्दी का आधिकारिक महीना है। 14 सितम्बर 1949 को संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। तब से निरंतर हम भारत में हिन्दी भाषा के संवर्धन के लिए इस मास विशेष में हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी मास का आयोजन लगभग सभी सरकारी, गैरसरकारी कार्यालयों में संचालित होते देख रहें हैं।

संविधान द्वारा हिन्दी भाषा को प्रदत्त अधिकारों के बावजूद आखिर वे कौन से कारण हैं जिससे हिन्दी राजभाषा के रूप में उस रूप में राष्ट्रव्यापी स्वरुप हासिल नहीं कर सकी जिसकी वह वास्तविक अधिकारी है। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद हिन्दी को उसके राष्ट्रव्यापी स्वरुप की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयासरत है और अपने स्तर से जनता और सरकार के प्रतिनिधियों के मध्य निरंतर संवाद सेतु की भूमिका में सक्रिय है। हिन्दी और तमाम भारतीय भाषाओं के संरक्षण-संवर्धन के प्रति हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी कृतसंकल्प थी, है और सदा रहेगी। इसमें किसी प्रकार की कोई अनिश्चय की स्थिति नहीं है।

हम सब अपनी मातृभाषा में बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दें, और संपर्क भाषा के रूप में तथा अन्य जरूरतों के लिए अधिक से अधिक हिन्दी भाषा का प्रयोग कर उसका संवर्धन करें। इन उद्देश्यों के सदा स्मरण रखते हुए अकादमी निरंतर कार्यरत है। भारत जैसे बहुभाषी देश में परस्पर संवाद, सम्मान और स्वीकार्यता के द्वारा ही हम राष्ट्रीय अखंडता की रक्षा कर सकते हैं। राष्ट्रीय अखंडता के साथ स्थानीयता की रक्षा और सम्मानपूर्ण जीवन भी अनिवार्य आवश्यकता है। स्थानीयता-प्रांतीयता-राष्ट्रीयता को परस्पर पूरक और साधक समझने की जरुरत है न कि बाधक। कई बार हम भ्रमवश या लापरवाहीवश इन्हें आमने-सामने रख देते हैं जिससे टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। यह अत्यंत दुखद है। हमें ऐसी अप्रिय स्थितियों से स्वयं तो बचना ही है, अपने अड़ोस-पड़ोस, सगे-संबंधियों को भी निरंतर बचाये रखना है। तभी हम सही मायने में अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वहन कर पायेंगे। हिन्दी भाषा के इस आधिकारिक रूप में भी हमें अपने दायित्त्वों को निरंतर स्मरण रखना अनिवार्य है। राष्ट्रीय कवि मैथिली शरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में लिखा है-

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।।

इस चिंतन की बुनियाद में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र कि भाषायी चेतना और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी भाषा संबंधी परिष्करण और अनुशासन समाहित है। भाषा सदानीरा कहलाती है। देश-काल, युग-परिवेश से निरंतरता की धार के रूप में हिन्दी भाषा भी प्रवाहमान है। हम सब हिन्दी भाषा के साथ-साथ समस्त भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण के बल पर निरंतर अग्रसर है और आप सबके सहयोग से अग्रसर रहेंगे। आप सभी को हिन्दी दिवस कि बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य

- हिन्दी की सम्पूर्ण भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार्यता और क्षेत्रीय भाषाओं के अधिकार को लेकर चेतनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- हिन्दी समेत देश की विभिन्न बोलियों का परिरक्षण, संवर्धन और विकास करना, जिससे हिन्दुस्तानी साहित्य और समृद्ध हो सके।
- ज्ञान की विभिन्न शाखाओं से सम्बद्ध भारत तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री का मानक हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था।
- सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहन एवं उसका प्रकाशन।
- हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ ग्रन्थ बनाना और उनका प्रकाशन।
- साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, अनुवादकों, वैज्ञानिकों तथा कलाकारों का सम्मान करना।
- हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं पर अकादमिक व्याख्यानमाला का आयोजन करना।
- हिन्दुस्तानी साहित्य के प्रसार और प्रचार के लिए वार्षिक सम्मेलन का आयोजन करना।
- हिन्दी साहित्य के वैज्ञानिक स्वरूप को वैश्विक स्तर पर ख्याति दिलाने हेतु विश्व की भाषाओं में समकालीन हिन्दी साहित्य के अनुवाद तथा अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में शब्द ग्रहण तंत्र का निर्माण।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं के मानकीकरण के लिए कार्यशाला का आयोजन ।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं और संस्कृति को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन हेतु पत्रिका, समाचार पत्रों व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का संचालन करना।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगठन का निर्माण व विस्तार ।
- उत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रयोग होने वाले हिन्दी शब्दों के मानकीकरण द्वारा इसकी समकालीन उपयोगिता को स्थापित करने का प्रयास। इस हेतु ज्ञान की नवीनतम शाखाओं हेतु मानक शब्दकोशों का निर्माण।
- मुद्रण लेखन में मानक देवनागरी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार और हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के नवीनतम संचार, तकनीक एवं उपकरणों में प्रयोग की दिशा में तकनीकविदों के साथ मिलकर कार्य करना।
- हिन्दी साहित्य और समालोचना को राजनीतिक खेमेबाजी से उबार कर सार्वभौमिक संवाद की ओर ले जाना।
- देशज बोलियों और विधाओं को प्रोत्साहित करना।

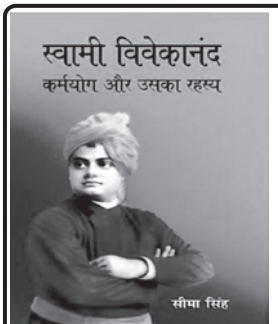

प्रकाशक : अयन प्रकाशन
फोन : 011-26645812, 9818988613

द्वितीय हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान
हेतु चयनित पुस्तकें

सीमा सिंह

हार्दिक शुभकामनाएँ!!!

नीतू सिंह राय

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

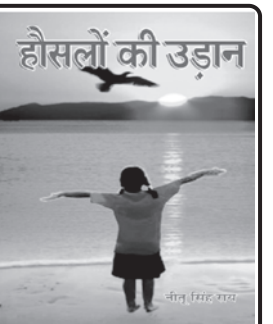

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
फोन : 011-23553624, 9213527666

साक्षात्कार : श्री बल्देव भाई शर्मा

राज्यों में हिन्दी का विरोध, हिन्दी साहित्य, राष्ट्रभाषा का प्रश्न

डॉ. रमेश तिवारी

हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति, उनके भविष्य सहित कई गंभीर विषयों जैसे राज्यों में हिन्दी का विरोध, हिन्दी साहित्य, राष्ट्रभाषा का प्रश्न, 8वीं अनुसूची, अनुवाद के माध्यम से भाषाओं और संस्कृतियों का मेलजोल आदि पर डॉ. रमेश तिवारी द्वारा श्री बल्देव भाई शर्मा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का लिया गया साक्षात्कार ।

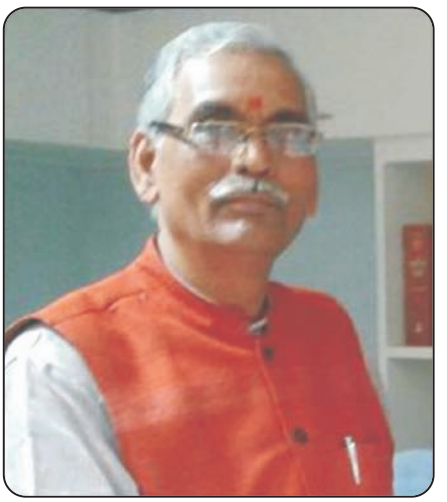

प्रश्न : आदरणीय श्री बल्देव भाई शर्मा जी ! सर्वप्रथम हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की ओर से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के ६० वर्ष पूरे होने पर आपको बधाई ।

उत्तर : जी, धन्यवाद ।

प्रश्न : एक पत्रकार के रूप में अपने आरंभिक जीवन से लेकर यहाँ (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष पद) तक की विकास यात्रा के बारे में हमारे पाठकों को बताएं ।

उत्तर : विकास यात्रा तो खैर क्या है ! पत्रकारिता सम्बन्धी एक पत्रकार के रूप में मेरा जो अनुभव है वह आज इस पद पर मेरे लिए अत्यंत सहायक है । क्योंकि पत्रकारिता का उद्देश्य केवल खबरों को यहाँ से वहाँ पहुँचाना मात्र नहीं है । बल्कि राष्ट्रीय और सामाजिक मुद्दों पर लोक जागरण करना, लोगों को शिक्षित करना और सामाजिक मुद्दों पर सही ढंग से सोचने की चिंतन दृष्टि प्रदान करना है और जो भारतीय जनमत है वह राष्ट्र के उन्नयन में एक ताकत बने । अन्यथा बहुत सारी ऐसी बातें और विषय हैं जिनको लेकर समाज को भ्रमित किया जाता है। मेरे हिसाब से एक पत्रकार की सही भूमिका है कि वह समाज के सभी मुद्दों पर सही ढंग से सोचने का एक मार्ग बताए । राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भूमिका है, अच्छा गुणवत्तायुक्त साहित्य प्रकाशन, पुस्तक संस्कृति का उन्नयन। पुस्तकों के माध्यम से भी एक प्रकार से समाज जागरूक होता है । पुस्तकों के माध्यम से हितकारी ज्ञान का प्रसार हो, इस उद्देश्य में पत्रकारिता के मेरे अनुभव से मुझे बड़ी सहायता मिलती है । ज्ञान दोधारी तलवार है । यदि ज्ञान के साथ मनुष्यता का संस्कार नहीं होगा, तो वह बहुत घातक हो सकता है । वह फिर मानवता के विनाश की ओर भी ले जाता है । इसलिए ज्ञान के साथ मनुष्यता का संस्कार होना अत्यंत आवश्यक है और भारतीय जीवन पद्धति में विद्या मनुष्यता का संस्कार देने वाला ज्ञान है । और इसी तरह एक अविद्या होती है- अविद्या तंत्र, हमारे यहाँ शब्द प्रयोग होता है। उसका अर्थ है कि ऐसा ज्ञान जो मनुष्यता का पोषक नहीं है और इसलिए पुस्तकों के माध्यम से विशेषकर जो हमारी नई पीढ़ी है, बच्चे हैं, युवा हैं उन तक जो ज्ञान पहुँचे वह मनुष्यता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता और वैश्विक चेतना का संस्कार लेते हुए पहुँचे । पुस्तकों के माध्यम से हम जिस समाज का सृजन करना चाहते हैं वह सबके लिए हितकारी हो । तुलसीदास ने रामचरित मानस में एक अत्यंत सुन्दर चौपाई लिखी है-

कीरति भणिति भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सब कर हित होई ।।

प्रश्न : जी ! यहाँ एक प्रश्न यह है कि हम जिस संस्कृति और ज्ञान की बात कर रहें हैं, यह हम भावी पीढ़ी को तो भाषा के माध्यम से ही देने में समर्थ हो पाएँगे । जब हमारी भाषा बची रहेगी तभी तो हम ये ज्ञान आगे आने वाली पीढ़ी को दे पाएँगे ?

उत्तर : देखिए ! एक समय था जब भारत का ज्ञान श्रुत परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ता गया । बाद में जब पुस्तक प्रकाशन शुरू हुआ तो भाषाएँ उसका आधार बनीं और भारत तो इस मायने में विश्व का अनूठा देश है । यहाँ इतनी सारी भाषाएँ, उपभाषाएँ, बोलियाँ आदि हैं जो विश्व के किसी देश में नहीं हैं ।

प्रश्न : लेकिन आज के सन्दर्भ में हम देखते हैं कि भाषाएँ ही एक-दूसरे के खिलाफ खड़ी हो रही हैं ?

उत्तर : ये भाषाएँ नहीं खड़ी हो रही हैं, राजनीतिक हित के लिए भाषाओं को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा किया जा रहा है । भाषाओं में एक-दूसरे से विभेद कहीं से भी नहीं है क्योंकि संस्कृत को सर्वभाषाओं की जननी कहा गया है । संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है । न केवल भारतीय, विश्व की भी कई भाषाओं का स्रोत संस्कृत है । और आप मलयालम को देखें । सुदूर दक्षिण की भाषा है । मलयालम में 50 प्रतिशत से अधिक शब्द संस्कृत के हैं। कई ऐसी भाषाएँ हैं जिनमे संस्कृत के अनेक शब्द हैं।